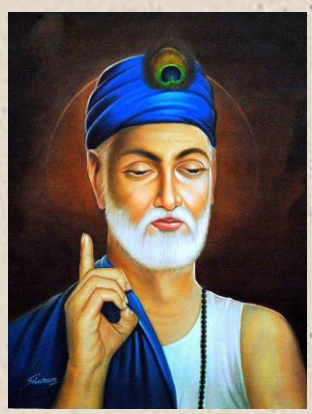

"बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि,

हिये तराजू तौलिया के, तब मुख बाहर आनि ।

अर्थ-----

जो व्यक्ति अच्छी वाणी बोलता है वहीं जानता है कि वाणी अनमोल रत्न है। इसके लिए ह्रदय रूपी तराजू में शब्दों को तोलकर ही मुख से बाहर आने देता है।

यह दोहा हम सब को वाणी के महत्व को समझाता है ।वाणी पर संयम रखने वाला व्यक्ति ऊंचाइयों तक पहुंच जाता है। इसके विपरीत अनियंत्रित वाणी वाले व्यक्ति को प्रायः जीवन भर सफलता प्राप्त नही होती।

सफलता का एक मूल रहस्य है कि किसी के प्रति अप्रिय न बोलना, मृदुभाषी होने पर लोगों का सहयोग एवं समर्थन मिलता है जिससे काम करने में एक नई ऊर्जा का संचार होता है। जबकि कटु वचन बोलने वाला व्यक्ति अकेला पड जाता है।

वार्तालाप की शिष्टता मनुष्य को आदर का पात्र बनाती है । हमारी वाणी ही हमारी शिक्षा-दीक्षा, कुल की परंपरा और मर्यादा का परिचय देती हैं । हमें वार्तालाप में व्यापारिक बातचीत एवं निजी बातचीत में थोडा अंतर रखना चाहिए ।वाणी किसी भी स्थिति में कटु एवं अशिष्ट नही होनी चाहिये ।

व्यावसायिक जीवन में भी हमें अपने शब्दों पर नियंत्रण होना चाहिए तभी हम सफलता पा सकेंगे ।

CS Praveen Soni
Central Council Member &
Chairman, ICSI-CCGRT